

296 अ. नं. ८५

स्ताव.

नेबर = 9

श्रीद-स्तोत्र



६७८/स्तो. ७३

श्रीगुरुदत्तत्रयेयः ॥ श्रीगुरुदत्तत्रयेयः ॥
 १) वंदु आदि गुरुचरणौ बोडरीना
 मेकैरुस्मरण ॥ नमस्मरणमा
 त्रेयेउनिया जोवारित जन्ममर
 णा ॥ ५८ ॥ अथ मनमिनयो
 गिरा जे अथ तार कार्तिके पौ
 णिमे जांछा ॥ कार्तिक वद्य
 प्रतिपदे अत्रिवरद वंदेन
 त्याका सवेचि कार्तिक व
 द्यदि तीये सिद्धता त्रेयनाम
 जांछा ॥ कांछा गिरा मन
 शुद्ध मा गरीष चक्रे दर्शी
 स अरु नो दयाली ॥ ५९ ॥ मा
 गरीष पौर्णिमे सी योगिन
 नववस्त्र अवरदा वि
 लिच्छा वि अंभर पौषि पौषि
 मेरी आपु लोभा क सिद्धा
 वि ॥ सिद्धरात्र माहे पौर्णि
 मे म गटे प्राप्त सिद्ध दिक्षा
 ठा वि ॥ विज्ञान सागर फल
 कल्प न दश मि शुद्ध सत्
 ति लो जा वि ॥ ६० ॥ विश्वभ
 र चनेने पौर्णिमे प्रगटे स्मरणे चिभ
 १०) वभयन दि ॥ वेरा ख शुभ च
 ॥ तु दशिस माया मुक्त गुण राशि
 ॥ माया मुक्त जे शुभ त्रयोदश
 ॥ सस्मर ता दे सो रय्य पदा सी ॥ आ
 ॥ घाठि पौर्णिमे आदि गुरुपुजा
 ॥ सर्वहि संप्रदाया सि ॥ ६१ ॥ शु
 ११) दुआ र मि श्रावण शिवरुप

(2)

॥ श्रीगणेशाय नमः श्रीगुरुदत्त
 ॥ यममः ॥ यममोहावतारधा
 ॥ नमः ॥ चउवाडवाडिभिः चउशिः
 ॥ कमादुकिपतोदधेत ॥ उधेतः
 ॥ अकहरेवचउसरचमिश्रुले
 ॥ कं ॥ १ ॥ मालकमंडलुचारुभ
 ॥ चेपीतिसुंदरः ॥ योगिराजो
 ॥ व्येमितिदुंभुमाल्यांबरादिभु
 ॥ द्वा ॥ २ ॥ जयोत्रीचुरदोह्यचंवरद
 ॥ स्फुक्करोधरः ॥ गौरवर्षः पार
 ॥ चारः ॥ पीतमाल्यांदिभुधनः ॥
 ॥ दत्तश्चक्षुभुजेरयामश्चकहरेव
 ॥ दधत्कामात् ॥ दोपाणीचाध
 ॥ नोजान्वेयोगमुक्तेतिसुंदरः
 ॥ सखासनेनोपविष्टरत्न

(28)

॥ माल्यांबरादिभुत्त ॥ वी
 ॥ लामिनामनःस्यामोवाल्म
 ॥ वोदिगंबरः ॥ १५ ॥ स्तनयोः ती
 ॥ वलेजस्वीपरमानंदविग्रहः
 ॥ ब्रह्मक्यानंदगायश्चदर्श
 ॥ नाज्जनताभवेत् ॥ ६ ॥ गौरो
 ॥ तिसुंदरः पीतमंधमाल्या
 ॥ वरेयुतः ॥ जामुच्छः स्वकः
 ॥ सव्यादक्षिणोभयसूचकः
 ॥ ७ ॥ सखासनेनोपविष्टः
 ॥ प्रभानिजितप्रारकरः ॥ अ
 ॥ दुतात्मप्रभावश्चदर्शको
 ॥ योगिवल्लभः ॥ ८ ॥ लीला
 ॥ अंशरः नामकीउ

॥ द्रुभाद्रपदचतुर्दशि ॥ श्रीदेव
 ॥ देवजाश्रीनिपोगिमिदिगंबर
 ॥ गुणराशि ॥ कृष्णशामनय
 ॥ नक्षत्रिकातिकशुद्रदादशि
 ॥ दत्तात्रेयवरञ्जाक्षइश्राभर
 ॥ आनंदलिलाविलासी ॥ ॐ
 ॥ दत्तजन्मउक्तिपद्मपुराण ॥
 ॥ मार्गशिर्षेसितेपक्षेचतुर्द
 ॥ स्यांबुधेदिवा ॥ रोहिण्यां
 ॥ धर्मयामेआवतिर्जोदिगं
 ॥ बरः ॥ १३ ॥ मार्गशिर्षेशुक्ल
 ॥ स्वसंम्यामध्यरात्रोगर्भसंभू
 ॥ तिः सत्ताहोरात्रान् सत्तमा
 ॥ स्नानप्रकल्पवदुदर्याबुदवा
 ॥ सररोहिणिनक्षत्रयुतेसुर्यो
 ॥ दयवेलायां कालाग्नीशमन
 ॥ प्रादुश्रुतः तस्मिन्दिनेऋषि
 ॥ भायामिलितामाहानुसवो
 ॥ जातः ॥ अपरदिनेपोगिमा
 ॥ स्यां ॥ योगिजनवध्वभरूपेण
 ॥ देवादिनांदरिनिं जातं ॥ सु
 ॥ त्वादिवंययुः ॥ १३ ॥ पद्मपुरा
 ॥ णेरालिग्रामपरिक्षा ॥ मुख
 ॥ त्रयचवर्तलोषटचक्रः शाम
 ॥ लेविदु ॥ दत्तात्रेयरितिरज्यालो

॥ सर्वसौभाग्यदायकः ॥१॥
 ॥ चक्रत्रययुतः श्वापिनिम्
 ॥ तिश्च सुखप्रदः पूजनियोग
 ॥ यत्नेनः सर्वकामार्थसीद्व्य
 ॥२॥



Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(५) ॥ अथ केः सह ॥ तर्जुन्याद
 ॥ न्यायनेतान् विविहायनः
 ॥ ६॥ अधस्त्रादासनस्याधो
 ॥ मायासिद्धीः प्रदन्तियन् ॥
 ॥ सिद्धासनेनोपविष्टो जा
 ॥ न्वोः पाणिद्वयं दधत् ॥ १०॥
 ॥ ध्यानवानसिद्धराजोसो मनो
 (५A) ॥ तयोगिसिद्धिदः ॥ त्रिवर्णा
 ॥ बन्धमात्म्यादिभूषितो दिव्य
 ॥ विग्रहः ॥ ११॥ पद्मासनेनोप
 ॥ ष्ठो विलम्बसागराकरः ॥ ५
 ॥ कानुग्रहकृद्दयस्य सव्यः स
 ॥ व्यसव्यः सक्तो नुग ॥ १२॥
 ॥ मायासिद्धीः पाकलुप्तज्ञान
 (५B) ॥ वादवदन् विभुः ॥ दिव्य
 ॥ स्त्रिवर्णवस्त्रश्च गंधात्त्रि
 ॥ रत्नोन्मिश्रितः ॥ १३॥ सुखास
 ॥ नेसभासीनोवासेजनौकरंद
 ॥ धत् ॥ दक्षिणे हृदि चात्मानं
 ॥ उरसेषं योगसिद्धिदं ॥ १४॥
 ॥ दर्शयन्नात्मनो भक्तिः महि
 (५C) ॥ मानं वदन् स्थितः ॥ विश्वं भ
 ॥ रोक्षत्तु गोप्ता त्रिवर्णमंडन
 ॥ प्रियः ॥ १५॥ विष्णुर्भो भूष
 ॥ मित्रः शुभ्रचंदनशोभितः
 ॥ दक्षिणेन दधत् दंडं पाणा

(5)
 वन्ये रक्तो भितः ॥ १६ ॥ मि क्षापा
 त्रौ गौर मू ति दिव्या लं कार
 शो भितः ॥ माया मुक्तो भक्त भो
 व मी क्षमा णो घनो रानः ॥ १७ ॥
 ॥ ॐ क ये सु वती वि भ्रत नम
 ॥ नमो महा युवा ॥ म धु पा त्रं क
 ॥ र स्ता भ्यां द नं म धु पि वं शुभं
 ॥ १८ ॥ स्तु र वा स ने ना य वि षे र
 ॥ क मा ल्या धृ ता दि भृ त ॥ र सु व
 (5A)
 ॥ का म प्र दो दे वो मा या मु क्तो ति
 ॥ सं द रः ॥ १९ ॥ स्तु र वा स ने स
 ॥ मा सी नः शा म ज्ञा नं वि ग्र ह
 ॥ स्ति ष्या नु ग ह क र्ण्य स्तु पा णि
 ॥ वा भि रक्त ज्ञा नु यः ॥ २० ॥ ध्या न
 ॥ मु द्रां द ध्य द्यो गी ध्य यो वि
 ॥ ज्ञा न धा र क्त रः ॥ श्री मा ना दि
 (5B)
 ॥ गुरु दिव्यः त्रि व र्ण बि र भु वि
 ॥ तः ॥ २१ ॥ नि व रू पे लिं ग रू पे
 ॥ ने क रू पः शु भ प्र भः ॥ भू क्त
 ॥ भ्यो नि ज रा यु ज्य प्र दः स्व तं
 ॥ ब रा दि भृ त ॥ २२ ॥ व रा न न
 ॥ सा मा सी नो ज घ ने ना भि स
 (5C)
 ॥ नि धो वो म पा णि ले पा
 ॥ णिं द धा नो न्यं स को म लं ॥ २३ ॥
 ॥ दे व दे वः को ठि चं द्र प्र भः

(6) ॥ शुभ्रां वरादि पट्ट ॥ ब्रह्मादा
 ॥ नादनीनादि मोक्ष देती व
 ॥ सुंदरः ॥ २४ ॥ दिगं वरो हेम
 ॥ गर्भः निभः सुंदर विग्रहः ॥
 ॥ जगवान् योगवैराग्यस्थ
 ॥ पक्वः प्रकृतेः परः ॥ २५ ॥
 ॥ दिव्य मनोरमं नेत्रं दिव्यं
 (6A) ॥ दिरमध्यं मे ॥ सिरः सव्ये करे
 ॥ न्यस्य कर्णौ मूलां तु जानुगं ॥
 ॥ क्षापा नो योग निद्रा वान् ॥
 ॥ कृष्ण क्षामाब्ज लोचनः ॥
 ॥ उग्रो यदि कुरु स्थिता पूर्व
 ॥ दिग्मुखः स्रुव विग्रहः
 (6B) ॥ २७ ॥ पीतासाः पीतगंधमा
 ॥ लोकारो धितः ॥ सर्वदे
 ॥ वमयो देवो योगमाक्षै क
 ॥ कारणः ॥ २८ ॥ इति श्री दत्ता
 ॥ त्रेगुरो ध्यानि रत्नात्रं संपूर्णमि
 ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com